ईश्वर के नैतिक गुण
(Ethical Attributes of God)

नैतिकता धर्म की आधारशिला है, नीतिशून्य धर्म तो किसी भी समाज को मान्य नहीं। अतः सामाजिक दृष्टि से धर्म की अभिव्यक्ति नैतिक मूल्यों के ही माध्यम से होती है। अतः किसी अर्थ में अनैतिक धर्म तो असामाजिक है, इसीलिये ईश्वर के नैतिक गुण सामाजिक दृष्टि से धर्म के आवश्यक अंग माने जाते हैं। रहस्यवादी सन्तों को ईश्वर चाहे जिस रूप में दिखलायी पड़े, साधारण सामाजिक व्यक्ति को तो वह दया, प्रेम, परोपकार, त्याग आदि सामाजिक मूल्यों से विभूषित ही दिखलायी पड़ता है। इसीलिये दया, प्रेम आदि को ईश्वर का नैतिक गुण माना जाता है। उदाहरणार्थ; यहूदी और इस्लाम धर्म का ईश्वर न्यायरूप, ईसाई धर्म का ईश्वर प्रेमरूप और हिन्दू धर्म का ईश्वर दयासागर दिखलायी पड़ता है। तात्पर्य यह है कि न्याय, प्रेम, दया आदि नैतिक गुणों के बिना ईश्वर की कल्पना नहीं की जा सकती। अन्यायी, द्वेषी और क्रूर ईश्वर किसी को मान्य नहीं। ईश्वर के नैतिक गुणों में शुभ-शिव, न्याय-परायणता, प्रेम और दया आदि महत्वपूर्ण हैं।

१. शुभ या शिव—ईश्वर को शुभ या शिव-स्वरूप माना जाता है। वह कल्याणकारी है, मंगलमय है। मानव अशुभ तत्वों के कारण अनेकों प्रकार के दुःख-दैन्य और निराशा का सामना करता है, अतः वह शुभ या शिवरूप ईश्वर की उपासना करता है। अतः ईश्वर का शुभ होना आवश्यक है।

२. न्यायपरायणता—ईश्वर न्यायप्रिय है, वह सर्वदा अन्याय और अत्याचार का विरोध करता है। अन्यायी और अत्याचारी को दण्ड देना ईश्वर का प्रमुख कार्य है। मनुष्य कर्म करता है परन्तु फल का विधान ईश्वर के अधीन है। कर्म के अनुसार ही ईश्वर फल देता है। इसीलिये ईश्वर को सर्वोच्च न्यायाधीश माना जाता है। कभी-कभी असत्य और पाप की विजय होती हुई दिखलायी देती है परन्तु अन्तिम निर्णय ईश्वर का ही होता है। अन्ततोगत्वा धर्म और सत्य की ही विजय होती है। ईश्वर ही धर्म और न्याय के पक्ष को विजयी बनाता है।

३. प्रेम—ईश्वर को प्रेममय माना जाता है। वह किसी से घृणा नहीं करता, किसी के प्रति द्वेष नहीं रखता। जगत का माता पिता होने के कारण सभी सन्तान

Scanned by TapScanner

के प्रति ईश्वर के हृदय में अगाध प्रेम रहता है। प्रेम के कारण ही हम ईश्वर को पिता की संज्ञा देते हैं। ईसाई धर्म में 'प्रेम पिता' की कल्पना की गयी है। इसका स्पष्ट आशय यह है कि ईश्वर के हृदय में सबके प्रति समानतः प्रेम है।

४. **दया-क्षमा**—ईश्वर परम दयालु और क्षमाधाम है। ईश्वर को दया-सागर समझकर ही हम उसकी पूजा और प्रार्थना करते हैं। ईश्वर हमारे द्वारा किये गये भूलों को क्षमा करता है। अपने भक्तों के द्वारा किये गये जघन्य अपराधों को भी ईश्वर क्षमा कर देता है। यह उसकी महानता का प्रतीक ह।

ईश्वर के नैतिक गुणों के प्रति एक आक्षेप किया जाता है। आलोचकों का कहना है कि नैतिक गुण तो मनुष्यों में पाये जाते हैं। मनुष्य इन गुणों का आरोप ईश्वर पर करता है; परन्तु ऐसा करने से ईश्वर का मानवीयकरण हो जाता है। ईश्वर मनुष्य के परे है। उसे विश्वातीत माना गया है। नैतिक गुण तो विश्व में पाये जाते हैं। अतः नैतिक गुणों के कारण ईश्वर का विश्वातीत रूप नष्ट हो जाता है या ईश्वर का मानवीयकरण हो जाता है। अतः कुछ आलोचकों का कहना है कि ईश्वर पर नैतिक गुणों का आरोप नहीं किया जा सकता, परन्तु यह आलोचना समीचीन नहीं। धर्म के लिये ईश्वर का विश्वातीत होना आवश्यक है। उपासक और उपास्य देव में दूरी अवश्य होनी चाहिए। साथ ही उपास्य देव में नैतिक गुणों का होना आवश्यक है। ईश्वर में नैतिक गुणों के कारण ही उपासक आकृष्ट होता है। सदाचार और नैतिक गुणों के कारण ही मनुष्य ईश्वर तक पहुँच पाता है। अतः नैतिक गुण तो सोपान हैं। ईश्वर नैतिकता की पराकाष्ठा है। वही नैतिकता का निर्धारण करता है। वह स्वयं नैतिक आचरण कर मनुष्य के लिए आदर्श मार्ग स्थापित करता है। यदि ईश्वर नैतिक न हो तो दया, परोपकार, क्षमा, त्याग आदि नैतिक गुण निराधार हो जायेंगे। समाज में इन गुणों का महत्व इसलिए है कि इन गुणों के माध्यम से ही मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करता है। अतः नैतिक गुण सामाजिक होते हुए भी आध्यात्मिक हैं। ये गुण मनुष्य में भी पाये जाते हैं, परन्तु आंशिक रूप से। इनका पूर्ण रूप तो परमात्मा में ही प्राप्त होता है। मनुष्य दया कर सकता है परन्तु दया सागर तो ईश्वर ही हो सकता है। धार्मिक दृष्टि से ईश्वर के नैतिक गुण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि नैतिकता ही धर्म की आधारशिला है। नैतिक मूल्यों के बिना धर्म जीवित नहीं रह सकता।

Scanned by TapScanner